

वैदिकवाङ्मय

परीक्षा दृष्टि

(NTA, UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GIC-Lecturer, GDC, Higher Education
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी)

लेखक
सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक
संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, प्रयागराज
www.sanskritganga.org

ISBN : 978-81-938257-1-6

☛ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - 7800138404, 9839852033
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☛ **वितरक**

* **युनिवर्सल बुक्स**
अल्लापुर, प्रयागराज
* **राजू पुस्तक केन्द्र**
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) मो० 9453460552

☛ संस्करण - मई-2019

☛ **मूल्य – ₹ 145 /-** (एक सौ पैंतालीस रुपये मात्र)

☛ **पृष्ठविन्यास** – कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज, प्रयागराज

☛ **मुद्रक** – एकेडमी प्रेस, दारागंज, प्रयागराज

भूमिका

प्रिय संस्कृतमित्राणि

नमः संस्कृताय!

वेद भारत की अस्मिता है। वेदों के बिना भारत का अस्तित्व नगण्य है। वेदों के पठन-पाठन पर हमारे ऋषि-मुनियों ने सदैव अत्यधिक बल दिया है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण वैदिक मार्ग का अनुसरण करने में ही है। मनु ने वेदों को सभी धर्मों का मूल बताया है - 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। वेदों में मानवमात्र के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है -

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

पतञ्जलि भी निःस्वार्थभाव से वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करने हेतु प्रेरित करते हैं - 'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।' वेदों को प्रमाणरूप में स्वीकार करना ही एक सच्चे आर्य का लक्षण है - 'प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु।' परन्तु आज की पीढ़ी वैदिकवाङ्मय के अमूल्य ज्ञान से अनभिज्ञ प्राय है, जो कि भारत की अस्मिता के लिए अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक अपने इष्ट मित्रों के साथ विचार कर एक ऐसी पुस्तक का निर्माण करने का सङ्कल्प लिया गया, जो आज की युवा पीढ़ी को वैदिक वाङ्मय को सरलतम भाषा में परिचित करा सके। इस पुस्तक के माध्यम से छात्र वैदिक वाङ्मय के सारगर्भित स्वरूप से परिचित हो सकेगा।

चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, इतिहासवेद), छः वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) वेदों के ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक तथा उपनिषदों के ग्रन्थीय स्वरूप को क्रमशः महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं सहित सरलतम रूप में प्रस्तुत

किया गया है। वैदिक देवताओं के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए अद्यावधि लिखे गये वेदभाष्यों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। वैदिक वाङ्मय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सूची इस पुस्तक के महत्त्व को और अधिक बढ़ाती है। **यह पुस्तक UGC-NET/JRF, SLET, DSSSB, GDC, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, डायट प्रवक्ता आदि प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी - ऐसा मेरा विश्वास है।**

पङ्कजकुमार शर्मा, सत्यप्रकाश साहू, सुमन सिंह, अम्बिकेश प्रताप सिंह, कविता सिंह, नीलम गुप्ता, नितीश उपाध्याय, स्नेहा पाण्डेय, महिमा यादव, कृष्णकुमार, राजेश तिवारी, श्यामकिशोर मिश्र, सन्तोष यादव 'साहब' आदि मित्रों के निरन्तर सहयोग व चिन्तन से ही यह कार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका है। इस ग्रन्थ को लिखते समय पूरी सावधानी के साथ यह प्रयत्न किया गया है कि पाठकगण वैदिकवाङ्मय के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं से अनायास परिचित हो सकें।

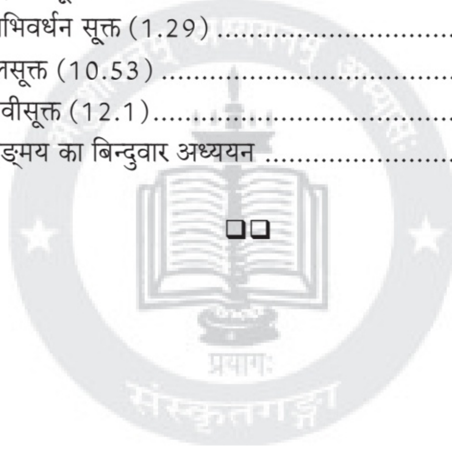
श्रीमान् अनन्त प्रसाद त्रिपाठी (गहनौआ, रीवा म.प्र.) एवं प्रो. ललितकुमार त्रिपाठी (प्रयागराज) के श्री चरणों में प्रणाम करते हुए ये आशा है कि यह ग्रन्थ निश्चित ही पाठकों की जिज्ञासा को पूर्णकर वेदों के प्रति उन्हें आकृष्ट करेगा।

विनयावनत

सर्वज्ञभूषण

❑❑

विषयसूची


प्रयागः
संस्कृतगङ्गा

❑❑

९. वेदाङ्ग

➢ वेदों के गूढ़ एवं वास्तविक अर्थों को जानने के लिए जिन सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है। उन्हे वेदाङ्ग कहते हैं।

➢ वेदाङ्ग का अर्थ है- वेद के अङ्ग।

➢ 'वेदाङ्ग' में अङ्ग शब्द का अर्थ है 'वे उपकारक तत्त्व जिनसे वस्तु के स्वरूप का बोध होता है।' 'अङ्ग्यन्ते ज्ञायन्ते एभिरिति अङ्गानि।'

➢ वेदाङ्गों के द्वारा मन्त्रों का अर्थ उनकी व्याख्या तथा यज्ञ में उनके विनियोग आदि का बोध होता है।

➢ वेदाङ्गों की संख्या छः है -

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, कल्प, वेदाङ्ग के विषय में पाणिनीय शिक्षा में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

'छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।। (पा०शि०41-42)'

1. छन्द	पाद (पैर)
2. कल्प	हस्त (हाथ)
3. ज्योतिष	चक्षु (नेत्र)
4. निरुक्त	श्रोत्र (कान)
5. शिक्षा	घ्राण (नाक/नासिका)
6. व्याकरण	मुख (मुँह)

➢ वेदाङ्गो का सर्वप्रथम उल्लेख मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के अन्तर्गत चार वेदों के नाम के बाद हुआ।

➢ उपनिषदों में दो प्रकार की विद्या का उल्लेख प्राप्त होता है-पराविद्या,अपराविद्या। अपराविद्या के अन्तर्गत चार वेद तथा छः वेदाङ्ग आते हैं।

सत्ताइस नक्षत्रों के नाम-

- जौ (अश्विनी), द्रा (आर्द्रा), गः -भगः (उत्तराफल्गुनी), खे-विशाखे (विशाखा), श्वे-विश्वेदेवाः (उत्तरा आषाढा), अहिः - अहिर्बुध्न्य (उत्तरा भाद्रपदा), रो (रोहिणी), षा - आश्लेषा, चित् - चित्रा, मू-मूल, ष-शतभिषक्, ण्यः - भरण्यः (भरणी), सू - पुनर्वसू (पुनर्वसु), मा - अर्यमा (पूर्वाफल्गुनी), धा - अनुराधा, णः - श्रवणः (श्रवणा), रे- रेवती, मृ - मृगशिरस् (मृगशिरा), घाः - मघाः (मघा), स्वा - स्वाति, आपः - आपः (पूर्वा अषाढा), अजः - अज एक पाद् (पूर्वा भाद्रपदा), कृ - कृत्तिका, ष्यः - पुष्य, ह - हस्त, ज्ये - ज्येष्ठा, ष्ठाः - श्रविष्ठा।
- अथर्ववेद के अनुसार सात सौर मण्डल हैं।
- ऋग्वेद में सूर्य अनेक हैं तथा सात दिशाएँ है, ऐसा वर्णन प्राप्त होता है।
- अथर्ववेद के अनुसार सूर्य की सात किरणें है इन्हीं के कारण वर्षा होती है।
- सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी को रोके है ऐसा वर्णन ऋग्वेद और यजुर्वेद में प्राप्त होता है।
- ऐतरेय ब्राह्मण और गोपथ ब्राह्मण के अनुसार न कभी सूर्य का उदय होता है और न कभी अस्त।
- एक अहोरात (दिनरात) में तीस मुहूर्त होते हैं, मन्त्र में मुहूर्त के लिए धाम शब्द का प्रयोग किया गया है।
- विषुवत् रेखा का उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में प्राप्त होता है।
- वेदाङ्ग ज्योतिष के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा दोनों **श्रविष्ठा** नक्षत्र के आदि में उत्तर की ओर गति करते हैं।
- सूर्योदय से लेकर अगले दिन सूर्योदय तक के 24 घण्टे के समय को सावन दिन कहते हैं।
- सावन शब्द **सवन (यज्ञ)** से बना है।
- सावन वर्ष में केवल 360 दिन होते हैं।
- सूर्य और चन्द्र की **युती अमावस्या** है।

कल्प वेदाङ्ग

- कल्पसूत्र ग्रन्थ का तात्पर्य प्रयोगविधि के यथार्थ प्रतिपादक ग्रन्थों से है।
- जिनसे सिद्ध प्रयोग का ज्ञान हो, वह कल्प है।
- सिद्ध प्रयोगों के बोधक होने के कारण कल्प अनुष्ठान के साधन होते हैं।
- जिन ग्रन्थों में यज्ञ-सम्बन्धी विधियों का समर्थन या प्रतिपादन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं- आचार्य सायण।
- जिन ग्रन्थों में वैदिक कर्मों का सांगोपांग विवेचन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं।
- कल्पसूत्र के भेद- कल्पसूत्र के चार भेद हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्बसूत्र।

श्रौतसूत्रों का परिचय

- श्रौत शब्द का अर्थ है 'श्रुति द्वारा प्रतिपादित या वेदों में वर्णित।
- श्रौतसूत्रों में यज्ञ-याग इष्टियों का विस्तृत विवेचन और वर्णन है।
- दर्श-पूर्णमास याग, सोमयाग, वाजपेययाग, राजसूययाग, अश्वमेधयाग, सौत्रामणीयाग आदि का विवेचन श्रौतसूत्र में प्राप्त होता है।
- दर्शपौर्णमास यज्ञ में चार ऋत्विक् होते हैं- अध्वर्यु, ब्रह्मा, होता, आग्नीध्र।
- दर्श-पूर्णमास याग अमावस्या और पूर्णिमा को किया जाता है।
- अमावस्या वाले याग में अग्नि के लिए पुरोडाश और इन्द्र के लिए दूध तथा दही की आहुति की जाती है।
- पूर्णिमा को किए जाने वाले यज्ञ में अग्नि और सोम के लिए घी और पुरोडाश (पिसा हुआ चावल) की आहुति दी जाती है।
- दर्शयाग अमावस्या को तथा पूर्णमासयाग पूर्णिमा को (पूर्णमासी को) किया जाता है। दर्श-पूर्णमास में तीन-तीन याग होते हैं।

  दर्शयाग के तीन भेद-

  1 अग्नि के लिए पुरोडाश याग 2 इन्द्र के लिए दधियाग

  3 इन्द्र के लिए दुग्धयाग
- पूर्णमासयाग के तीन भेद

  1 अग्नि के लिए अष्टकपालों में संस्कृत पुरोडाशयाग।

  2 अग्निष्टोम के लिए घृत का उपांशुयाग।

  3 अग्निष्टोम के लिए एकादशकपाल पुरोडाश याग।
- सान्नाय्यपद दधि और दुग्ध का बोधक होता है।
- **सात हविर्यज्ञ के नाम-** अग्न्याधान,अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रहायण, चातुर्मास्य, निरूपढपशुबन्ध, सौत्रामणि।
- **सात सोमयाग के नाम-** अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम।
- चातुर्मास्य यज्ञ में चार पर्व होते हैं- वैश्वदेव, वरुणप्रघास, साकमेध, शुनासीरीय।
- सौत्रामणी एक पशुयाग है जो इन्द्र के निमित्त किया जाता है।

ऋग्वेद से सम्बन्धित श्रौतसूत्र-

- ऋग्वेद से सम्बन्धित दो श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं- आश्वलायन श्रौतसूत्र तथा शांखायन श्रौतसूत्र

आश्वलायन श्रौतसूत्र का परिचय

- आश्वलायन श्रौतसूत्र के रचयिता ऋषि आश्वलायन हैं।
- आश्वलायन शौनक ऋषि के शिष्य थे।
- ऐतरेय ब्राह्मण के अन्तिम दो अध्यायों के रचयिता आश्वलायन और शौनक माने जाते हैं।

- आश्वलायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल और बाष्कल दोनों शाखाओं से है। इसमें बारह अध्याय हैं।

आश्वलायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- दर्श-पूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयणेष्टि, काम्य इष्टियाँ, चातुर्मास्य, सौत्रामणी,
- ज्योतिष्टोम, सत्रयाग, एकाह, अहीनयाग, गवामयन आदि।
- श्रौतयागों के ऋत्विज् - होता, मैत्रावरुण, अच्छावाक्, ग्रावस्तुत।

शांखायन श्रौतसूत्र का परिचय

- शांखायन श्रौतसूत्र के रचयिता शांखायन ऋषि माने जाते हैं।
- शांखायन श्रौतसूत्र में 18 अध्याय हैं।

शांखायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- दर्श-पूर्णमास याग, अग्निहोत्र, आग्रयणेष्टि, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, अतिरात्र, द्वादशाह, विश्वजित्, हविर्याग, वाजपेय, बृहस्पति सव, सोम संस्थाएँ, आप्तोर्याम, राजसूय अश्वमेध, सर्वमेध, पुरुषमेध आदि।

शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र

- शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र कात्यायन श्रौतसूत्र है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र के रचयिता कात्यायन ऋषि हैं। इसमें कुल 26 अध्याय हैं।

कात्यायन श्रौतसूत्र का परिचय

- कात्यायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व दोनों शाखाओं से है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र में 26 अध्याय हैं, प्रत्येक अध्याय का विभाजन कण्डिकाओं में हुआ है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र की मुख्य आधारशिला शतपथ ब्राह्मण है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र के तीन अध्याय (22-24) सामवेद की ताण्ड्य ब्राह्मण पर निर्भर हैं।
- कर्काचार्य का विस्तृत भाष्य गूढ रहस्यों को समझने के लिए विशेष उपयोगी है।
- कात्यायन श्रौतसूत्र पर पूर्वमीमांसा का प्रभाव है,- श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या इन छः प्रमाणों का प्रभाव इस श्रौतसूत्र में प्राप्त होता है।

कात्यायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- याग-सम्बन्धी परिभाषाएँ, दर्शपूर्णमास याग, दाक्षायण याग, आग्रयणेष्टि, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, द्वादशाह, गवामयन वाजपेय, राजसूय, सौत्रामणी, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, एकाह, अहीन, प्रवर्ग्य।

कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित श्रौतसूत्र

- कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित आठ श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं-
  बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ या हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज, वाधूल, वाराह, मानवश्रौतसूत्र।

बौधायन श्रौतसूत्र का परिचय

- बौधायन श्रौतसूत्र के रचयिता बोधायन हैं जिनका समय 900 ई.पू. से 850 ई.पू. के मध्य माना जाता है।
- बौधायन श्रौतसूत्र की रचना ब्राह्मण ग्रन्थों के समान प्रवचन शैली में हुई है।
- बौधायन श्रौतसूत्र 30 प्रश्नों (अध्यायों) में विभाजित है।
- बौधायन श्रौतसूत्र का सम्पादन कैलेण्ड ने किया।
- दर्शपूर्णमास, अग्नयाधेय, अग्निहोत्र, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, प्रवर्ग्य, वाजपेय, राजसूय, औपानुवाक्य, अश्वमेध, द्वादशाह, अतिरात्र, एकाह, शुल्ब, प्रवर इसके प्रमुख वर्ण्य विषय हैं।

आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं जो बोधायन के शिष्य हैं।
- आपस्तम्ब का समय सातवीं शती ई.पू. माना जाता है।
- आपस्तम्ब कल्पसूत्र में 30 प्रश्न (अध्याय) हैं।
- आपस्तम्ब कल्पसूत्र श्रौत, गृह्य, धर्म, शुल्बसूत्र का मिश्रित रूप है।
- आपस्तम्ब श्रौतसूत्र पर धूर्तस्वामी का प्रसिद्ध भाष्य प्राप्त होता है, जो मैसूर से प्रकाशित है।

सत्याषाढ या हिरण्यकेशी श्रौतसूत्र-

- सत्याषाढ श्रौतसूत्र कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बन्धित है।
- इसके रचयिता सत्याषाढ हैं।
- सत्याषाढ़ का उपनाम हिरण्यकेशी है।
- सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र में 24 प्रश्न (अध्याय) हैं।
- इस श्रौतसूत्र में पितृमेध से पहले धर्मसूत्रों का समावेश है।
- सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र का एक संस्करण अनेक टीकाओं से युक्त आनन्द आश्रम पुणे से 1932 ई. में प्रकाशित हुआ जिसमें दस खण्ड हैं।

वैखानस श्रौतसूत्र का परिचय

- वैखानस श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- वैखानस गृह्यसूत्र में इसके रचयिता का नाम विखनस दिया गया है।
- वैखानस श्रौतसूत्र में 21 अध्याय हैं।
- वैखानस श्रौतसूत्र में अश्वमेध याग का निरूपण नहीं है।
- 1941 ई. में कैलेण्ड द्वारा सम्पादित संस्करण कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

वैखानस श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- अग्न्याधान, पुनराधान, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, आग्रायण, चातुर्मास्य, निरुढपशुबन्ध, सौत्रामणी, परिभाषा, अग्निष्टोम, वाजपेय, अग्निचयन, प्रायश्चित आदि विषयों का उल्लेख।

भारद्वाज श्रौतसूत्र का परिचय

- भारद्वाज श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र बौधायन श्रौतसूत्र का पश्चात्वर्ती तथा आपस्तम्ब श्रौतसूत्र का पूर्ववर्ती है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र 15 वें प्रश्न की 5वीं कण्डिका तक ही उपलब्ध है।
- भारद्वाज श्रौतसूत्र का गृह्यसूत्र और परिशिष्ट सूत्र भी प्राप्त होता है।
- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, परिशिष्ट सूत्र ग्रन्थों को संकलित करके अंग्रेजी अनुवाद के साथ डा. चिन्तामणि गणेश काशीकर ने वैदिक संशोधन मण्डल पूना से 1964 ई. में प्रकाशित कराया है।

वाधूल श्रौतसूत्र का परिचय

- वाधूल श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से है।
- वाधूल श्रौतसूत्र में 15 प्रपाठक (अध्याय) हैं। इनके उपविभाग अनुवाक और पटल हैं।
- डॉ. ब्रजबिहारी चौबे ने सम्पादित करके होशियारपुर से 1993 में प्रकाशित किया।

वाधूल श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, पुरोडाशी, याजमान, आग्रयण, बह्मत्व, चातुर्मास्य, पशुबन्ध, ज्योतिष्टोम, वाजपेय, राजसूय अश्वमेध, पवित्रेष्टि आदि।

वराह श्रौतसूत्र का परिचय

- वराह श्रौतसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा से है।
- वराह श्रौतसूत्र में तीन अध्याय हैं और उनके उपखण्ड हैं।
- प्रथम अध्याय **प्राक्सौमिक** में है।
- **डा. कैलेन्ड और डा. रघुवीर** के द्वारा सम्पादित इसका संस्करण 1993 में मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास लाहौर ने प्रकाशित किया।

वराह श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- परिभाषा, याजमान, ब्रह्मत्व, दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रायण, पशुबन्ध चातुर्मास्य ये प्रथम अध्याय में वर्णित हैं।
- द्वितीय अध्याय में अग्निचयन से सम्बद्ध सामग्री प्राप्त होती है।
- तृतीय अध्याय में वाजपेय द्वादशाह, गवामयन, उत्सर्गाणाम् अयन, महाव्रत, सौत्रामणी, राजसूय, अश्वमेध का वर्णन प्राप्त होता है।
- वराह श्रौतसूत्र में अपत्नीक को भी अग्न्याधान का अधिकार दिया गया है।

मानव श्रौतसूत्र का परिचय

- मानव श्रौतसूत्र का सम्बन्ध मैत्रायणी शाखा से है।
- मानव श्रौतसूत्र प्राचीनतम श्रौतसूत्र है।
- मानव श्रौतसूत्र में पाँच भाग और ग्यारह अध्याय हैं।
- मानव श्रौतसूत्र के पाँच भाग-प्राक सोम, इष्टिकल्प, अग्निष्टोम, राजसूय, चयन।
- इस श्रौतसूत्र की शैली कृष्ण यजुर्वेद के ब्राह्मणग्रन्थों के समान है इसमें आख्यान नहीं है।

- फ्रीड्रिश क्राउएर ने प्रारम्भिक पाँच अध्यायों को सेंट पीटर्सवर्ग से प्रकाशित किया।
- सन् 1961 ई. में जे. एम. गेल्डर ने सम्पूर्ण मानव श्रौतसूत्र को सम्पादित कर दिल्ली से प्रकाशित किया।
- श्रीमती गेल्डर ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।

सामवेदीय श्रौतसूत्र

- सामवेदीय श्रौतसूत्रों की संख्या चार है- आर्षेय कल्प, लाट्यायन श्रौतसूत्र, द्राह्यायण श्रौतसूत्र, जैमिनीय श्रौतसूत्र।

आर्षेय कल्पसूत्र का परिचय

- आर्षेय कल्पसूत्र सामवेदीय तांड्य महाब्राह्मण से सम्बद्ध है।
- मशक ऋषि द्वारा लिखे जाने के कारण इसे **'मशक कल्पसूत्र'** भी कहा जाता है।
- आर्षेय कल्पसूत्र दो भागों में विभक्त है- आर्षेय कल्पसूत्र, क्षुद्रकल्पसूत्र।
- आर्षेय कल्पसूत्र में छोटे भागों का वर्णन।
- आर्षेय कल्पसूत्र में ग्यारह अध्याय हैं जिनका मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि किस याग में किस विशेष साम का गान किया जाता है।

सोमयाग के तीन प्रकार-

- एकाह - एक दिन में पूर्ण होने वाला।
- अहीन- 2-11 दिन तक चलने वाला यज्ञ इसे 'क्रतु' भी कहते हैं।
- सम- 12 दिन से लेकर एक वर्ष या उससे भी अधिक समय तक चलने वाला याग।
- चार प्रकार के अभिचार-श्येन, इषु, सन्दंश, वज्र।
- ज्योतिष्टोम संख्या के चार प्रकार- अग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, अतिरात्र।

क्षुद्रकल्पसूत्र का परिचय

- क्षुद्रकल्पसूत्र के रचयिता भी मशक ऋषि हैं। यह आर्षेय, कल्प का ही दूसरा भाग है।
- यह ग्रन्थ तीन प्रपाठक और छः अध्यायों में विभक्त है।

क्षुद्रकल्पसूत्र में प्रतिपादित विषय-

विभिन्न काम्य इष्टियाँ और प्रायश्चित	अध्याय एक और दो
षृष्ठ्य षडह, द्वादशाह अनुकल्प	अध्याय तीन और चार
विभिन्न द्वादशाह याग	अध्याय पाँच और छः

- क्षुद्रकल्पसूत्र पर ताताचार्य के पुत्र श्रीनिवास की विस्तृत टीका प्राप्त होती है।
- डा. वी. आर. शर्मा द्वारा सम्पादित विश्वेश्वरानन्द संस्थान होशियारपुर से 1974 में प्रकाशित हुआ।

लाट्यायन श्रौतसूत्र का परिचय

- लाट प्रदेश गुजरात के आधार पर इसका नाम लाट्यायन पड़ा।
- इसमें दस प्रपाठक और 2641 सूत्र हैं।
- लाट्यायन श्रौतसूत्र पञ्चविंश ब्राह्मण से सम्बद्ध है।

लाट्यायन श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादित विषय	प्रपाठक
परिभाषाएँ और ऋत्विक् वरण	प्रथम प्रपाठक
अग्निष्टोम और उससे सम्बद्ध याग	द्वितीय प्रपाठक
षोडशी विषयक द्रव्य विधान	तृतीय प्रपाठक
वाजिभक्षण	चतुर्थ प्रपाठक
चातुर्मास्य, वरुणप्रघास और सोमचमस	पञ्चम प्रपाठक
सामविधान और द्वयक्षर-प्रतिहार	षष्ठ प्रपाठक
चतुरक्षा प्रतिहार, गायत्र गान	सप्तम प्रपाठक
एकाह, अहीन, वाजपेय याग, राजसूय याग	नवम प्रपाठक
सत्रयाग और उसकी परिभाषाएँ	दशम प्रपाठक

- लाट्यायन श्रौतसूत्र पर अग्निस्वामी का प्राचीन भाष्य उपलब्ध है।
- सम्पूर्ण लाट्यायन श्रौतसूत्र, अग्निस्वामी के भाष्य के साथ बिब्लियोथिका इण्डिका ग्रन्थमाला में सन् 1870-72 में प्रकाशित हुआ।

द्राह्यायण श्रौतसूत्र का परिचय

- द्राह्यायण श्रौतसूत्र का सम्बन्ध राणायनीय शाखा से है।
- द्राह्यायण श्रौतसूत्र के अपर नाम- छान्दोग्यसूत्र, प्रधानसूत्र, वाशिष्ठसूत्र
- द्राह्यायण श्रौतसूत्र का प्रचार दक्षिण भारत में अधिक है।
- कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा में यह श्रौतसूत्र अधिक प्रचलित है।
- द्राह्यायण श्रौतसूत्र में 3 पटल या अध्याय हैं।

द्राह्यायण श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

प्रतिपादित विषय	अध्याय
ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम	1-7
गवामयन सत्रयाग	8-11
ब्रह्मा के कार्य, हविर्याग, सोमयाग से सम्बद्ध कार्य कलाप	12-21
एकाहयाग	22-25
अहीनयाग	26-27
सत्रयाग	28-29
अयनयाग	30-31

- द्राह्यायण श्रौतसूत्र पर धन्विन् भाष्य उपलब्ध है।

- प्रो. बी. आर. शर्मा द्वारा सन् 1983 में गङ्गानाथ झा विद्यापीठ प्रयाग से इसका परिष्कृत रूप प्रकाशित कराया।

जैमिनीय श्रौतसूत्र का परिचय

- जैमिनीय श्रौतसूत्र का सम्बन्ध जैमिनीय शाखा से है।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र के रचयिता **जैमिनि** माने गए हैं।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र का बौधायन श्रौतसूत्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- तीन खण्डों के नाम- सूत्रखण्ड, कल्पखण्ड, पर्याध्याय या परिशेष खण्ड।
- जैमिनीय श्रौतसूत्र में कुल अध्यायों की संख्या अठारह है।

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र

- अथर्ववेद का एकमात्र श्रौतसूत्र वैतान श्रौतसूत्र है।
- वैतान श्रौतसूत्र गोपथ ब्राह्मण पर आश्रित है।
- वैतान श्रौतसूत्र के पूर्वार्द्ध पर कात्यायन श्रौतसूत्र तथा कौशिक श्रौतसूत्र का प्रभाव है।
- वैतान श्रौतसूत्र में आठ अध्याय और 43 कण्डिकाएँ हैं।

वैतान श्रौतसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- परिभाषा, दर्श-पूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, आग्रयणीय, इष्टि, चातुर्मास्य, अश्वमेध, पुरुषमेध, सर्वमेध, एकाह, अहीन याग, काम इष्टियाँ।

गृह्यसूत्रों का सामान्य परिचय

- गृह्यसूत्र में गृहस्थ से सम्बद्ध षोडश संस्कार, पञ्चमहायज्ञ, सातपाकयज्ञ, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, पशुपालन और कृषिकर्म, आदि से सम्बद्ध यज्ञों की विधियों का वर्णन प्राप्त होता है।
- गृह्यसूत्र का सम्बन्ध गृहस्थ जीवन से है, गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित सभी संस्कार इसमें वर्णित हैं।
- गृह्यसूत्रों से आर्यों की सामाजिक स्थिति और परम्पराओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
- गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त और मृत्यु के बाद भी किए जाने वाले संस्कारों तथा अनुष्ठान विधियों का विवरण प्राप्त होता है।
- गृह्यसूत्र में 42 संस्कारों का वर्णन है किन्तु गौतम चालीस संस्कार मानते हैं।
- गृह्यसूत्रों से जनपदों और ग्रामों में प्रचलित लोकधर्म और प्रथाओं का ज्ञान होता है।

ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र

- ऋग्वेद के तीन गृह्यसूत्र प्राप्त होते हैं-
- आश्वलायन श्रौतसूत्र, शांखायन श्रौतसूत्र, कौषीतकि श्रौतसूत्र

आश्वलायन गृह्यसूत्र का परिचय

- आश्वलायन गृह्यसूत्र के रचयिता आश्वलायन ऋषि थे।
- आश्वलायन गृह्यसूत्र में चार अध्याय हैं।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में वर्णित विषय-

वर्णित विषय	अध्याय
पाकयज्ञ, दैनिक होम, स्थानीक, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, अन्नप्राशन, मधुपर्क	**एक**
श्रवणाकर्म, अष्टका, वास्तु निर्माण गृहप्रवेश —	**दो**
पञ्चमहायज्ञ, ऋषितर्पण, उपाकर्म, समावर्तन —	**तीन**
दाहकर्म, श्राद्ध —	**चार**

- इस गृह्यसूत्र की **चार टीकाएँ** प्राप्त होती हैं
  1. जयन्त-स्वामी कृत विमलोदय
  2. देवस्वामी का भाष्य
  3. नारायण कृत विवरण टीका
  4. हरदत्त कृत अनाविला टीका

शांखायन गृह्यसूत्र का परिचय

- शांखायन गृह्यसूत्र ऋग्वेद की बाष्कल शाखा से है।
- शांखायन गृह्यसूत्र के रचयिता 'सुयज्ञ' हैं। इस गृह्यसूत्र में छः अध्याय हैं।
- टीकाकार नारायण के अनुसार पञ्चम अध्याय परिशिष्ट के रूप में है।
- वैदिक संहिताओं और उपनिषदों आदि के अध्ययन का नियम छठें अध्याय में है।
- प्रो. ओल्डेनबर्ग ने जर्मन भाषा में इस गृह्यसूत्र का अनुवाद किया।
- सीताराम सहगल द्वारा सम्पादित दिल्ली से 1960 में प्रकाशित हुआ।

कौषीतकि गृह्यसूत्र का परिचय

- कौषीतकि गृह्यसूत्र के रचयिता शाम्भव्य या शांबव्य हैं।
- इस गृह्यसूत्र में पाँच अध्याय हैं।
- पाँचवें अध्याय में अन्त्येष्टि का निरूपण है।
- कौषीतकि गृह्यसूत्र के दो संस्करण प्राप्त होते हैं-
  1 टी. आर. चिन्तामणि द्वारा सम्पादित, मद्रास विश्वविद्यालय से प्रकाशित
  2 पं. रत्नगोपाल द्वारा सम्पादित, काशी संस्कृत सीरीज से प्रकाशित।

शुक्लयजुर्वेद के गृह्यसूत्र

- शुक्ल यजुर्वेद का केवल एक गृह्यसूत्र पारस्कर गृह्यसूत्र प्राप्त होता है।

पारस्कर गृह्यसूत्र का परिचय

- पारस्कर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध शुक्लयजुर्वेद की दोनों शाखाओं से है।
- पारस्कर गृह्यसूत्र में तीन काण्ड तथा प्रत्येक काण्ड कण्डिकाओं में विभक्त हैं।
- इस गृह्यसूत्र के रचयिता आचार्य पारस्कर हैं जिनका समय 200ई.पू. के लगभग माना जाता है।

- पारस्कर गृह्यसूत्र पर पाँच विद्वानों ने भाष्य किए हैं- कर्क, जयराम, हरिहर, गदाधर, विश्वनाथ

पारस्कर गृह्यसूत्र में वर्णित विषय-

विषय	काण्ड
होम के सामान्य नियम, विवाह विधि गर्भाधान,पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन	प्रथम काण्ड
चूडाकर्म, उपनयन, समावर्तन, पञ्चमहायज्ञ उपाकर्म, अनध्याय, इन्द्रयज्ञ, सीतायज्ञ	द्वितीय काण्ड
आग्रहायणी कर्म, अष्टका, शालाकर्म, दाहविधि सभाप्रवेश, रथारोहण, हस्ति आरोहण	तृतीय काण्ड

कृष्ण यजुर्वेद के गृह्यसूत्र

- कृष्ण यजुर्वेद के नौ गृह्यसूत्र प्राप्त हैं।
- नौ गृह्यसूत्रों के नाम- बौधायन; मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक आग्निवेश्य, हिरण्यकेशि, वाराह, वैखानस।

बौधायन गृह्यसूत्र का परिचय

- बौधायन गृह्यसूत्र के रचयिता बोधायन हैं।
- बोधायन का समय ९००ई.पू. के लगभग है।
- शामशास्त्री द्वारा सम्पादित 1920 ई. में एक संस्करण मैसूर से प्रकाशित हुआ।
- बौधायन गृह्यसूत्र में चार प्रश्न (अध्याय) हैं।
- इस गृह्यसूत्र का प्रचार दक्षिण भारत में रहा है।
  विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण श्राद्ध आदि इसके मुख्य विषय हैं।

मानव गृह्यसूत्र का परिचय

- मानव गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा से है।
- मानव गृह्यसूत्र को मैत्रायणीय मानव गृह्यसूत्र भी कहा जाता है।
- गृह्यसूत्र के रचयिता आचार्य मानव को माना जाता है।
- इसमें दो पुरुष या अध्याय हैं।

मानव गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- ब्रह्मचारी के कर्तव्य, समावर्तन संस्कार, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण आदि।

भारद्वाज गृह्यसूत्र का परिचय

- भारद्वाज गृह्यसूत्र भारद्वाज कल्पसूत्र का एक अंश है।
- इस गृह्यसूत्र में तीन प्रश्न या अध्याय हैं।

- उपनयन, विवाह, सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, गृहप्रवेश, श्राद्ध आदि इसके प्रतिपादित विषय हैं।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र आपस्तम्ब कल्पसूत्र का अंश है जिसमें तीस प्रश्न हैं। 25, 26, 27 अध्याय गृह्यसूत्र के नाम से जाना जाता है। 25वें तथा 26वें अध्याय में विनियोज्य मन्त्रों का तथा 27वें अध्याय में गृह कर्मों का वर्णन है।
- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- आपस्तम्ब गृह्यसूत्र पर दो टीकाएँ प्राप्त होती है।

  1 हरदत्तमिश्र की अनाकुला टीका 2 सुदर्शनाचार्य की तात्पर्यदर्शन टीका

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय

- परिभाषाएँ, पाकयज्ञ, विवाह, स्थालीपाक, वैश्वदेवकर्म, उपाकरण, उपनयन, गायत्री उपदेश, चौलकर्म, होम, स्विष्टकृत् , रथारोहण आदि।

काठक गृह्यसूत्र का परिचय

- काठक गृह्यसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से है।
- काठक गृह्यसूत्र का अपरनाम 'लौगाक्षि गृह्यसूत्र' है।
- इस गृह्यसूत्र का मानव और वाराह गृह्यसूत्रों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- इस गृह्यसूत्र में पाँच अध्याय 75 कण्डिकाएँ हैं।
- काठक गृह्यसूत्र की तीन व्याख्या प्राप्त होती हैं-

  1 आदित्यदर्शन की विवरण 2 ब्राह्मणबल गृह्यपद्धति

  3 देवपल कृत भाष्य
- डॉ. कैलेन्ड ने तीनों व्याख्याओं के सारांश के साथ सम्पादित कर लाहौर से 1922 में प्रकाशित किया।

काठक गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय

ब्रह्मचर्य के नियम, समावर्तन, उपाकर्म, पाकयज्ञ, विवाह, वेदाध्ययन, होम, स्वस्त्ययन, श्राद्ध है।

आग्निवेश्य गृह्यसूत्र का परिचय

- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र के रचयिता अग्निवेश हैं।
- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र में तीन प्रश्न या अध्याय हैं।
- इस गृह्यसूत्र में मूर्तिपूजा का विधान तथा तान्त्रिक यन्त्रों का उल्लेख है।
- आग्निवेश्य गृह्यसूत्र श्री.एल.ए. रविवर्मा द्वारा सम्पादित 1940 में त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित हुआ।

हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र का परिचय

- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र को सत्याषाढ गृह्यसूत्र भी कहा जाता है।
- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र में दो प्रश्न (अध्याय) हैं, तथा प्रत्येक प्रश्न में आठ पटल हैं।

- हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय उपनयन, समावर्तन, प्रायश्चित, विवाह, शालाकर्म का वर्णन प्रथम प्रश्न में वर्णित हैं।
- सीमन्तोन्नयन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपाकरण का वर्णन द्वितीय प्रश्न में वर्णित है।

वाराह गृह्यसूत्र का परिचय

- वाराह गृह्यसूत्र का सम्बन्ध मैत्रायणीय संहिता से है।
- वाराह गृह्यसूत्र की वस्तु मानव गृह्यसूत्र के समान है।

  इस गृह्यसूत्र के दो संस्करण हैं

  1. सन् 1920 में मैसूर से डा. शामशास्त्री द्वारा सम्पादित
  2. सन् 1932 में लाहौर से डा. रघुवीर द्वारा सम्पादित

वैखानस गृह्यसूत्र का परिचय

- वैखानस गृह्यसूत्र का सम्बन्ध तैत्तिरीय शाखा से है।
- वैखानस गृह्यसूत्र के रचयिता विखनस् मुनि माने गये हैं।
- इस गृह्यसूत्र में विनियोग वाले मन्त्र प्रतीक रूप में दिए गए हैं।
- मन्त्रों के एक संकलन वैखानसीया मन्त्रसंहिता नाम से प्रकाशित हुआ है।
- वैखानस गृह्यसूत्र में सात प्रश्न और 120 खण्ड हैं।
- संस्कारों की संख्या अठारह है जिसे 'शरीर' नाम दिया है।
- अठारह संस्कारों के नाम- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तकर्म, जातकर्म, नामकरण, चूडाकर्म, उपनयन, उपाकर्म, समावर्तन, पाणिग्रहण।
- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ पाँच यज्ञों का वर्णन है।
- हविर्यज्ञ तथा सोमयज्ञ का उल्लेख भी प्राप्त होता है।
- डा. कैलेन्ड ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ कलकत्ता से 1929 में प्रकाशित किया

सामवेदीय गृह्यसूत्र

- सामवेद के निम्नलिखित गृह्यसूत्र उपलब्ध हैं- गोभिल, खादिर, द्राह्यायण और जैमिनीय गृह्यसूत्र। इसके अतिरिक्त कौथुमगृह्यसूत्र का सम्पादन डा. सूर्यकान्त ने किया, यह भी प्राप्त होता है।

गोभिल गृह्यसूत्र का परिचय

- गोभिल धर्मसूत्र सामवेद की कौथुम शाखा से सम्बन्धित है।
- सामवेदीय गोभिल गृह्यसूत्र सबसे प्रसिद्ध गृह्यसूत्र है।
- इसमें मन्त्र प्रतीकरूप में दिए गए हैं, सामवेद के मन्त्र भी इस गृह्यसूत्र में प्राप्त होते हैं।
- गोभिल गृह्यसूत्र में चार प्रपाठक हैं जो 39 खण्डों में विभक्त हैं।

गोभिल गृह्यसूत्र में प्रतिपादित विषय-

- सामान्य विधियाँ, होम के अधिकार, अग्न्याधान, आचमनविधि, वैश्वदेव विधि, दर्शपूर्णमास का वर्णन प्रथम प्रपाठक में है।

- विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, उपनयन का वर्णन द्वितीय प्रपाठक में है।
- गोदान, ब्रह्मचारी के कर्म, उपाकर्म, अनध्याय समावर्तन का वर्णन तृतीय प्रपाठक में है।
- पितृयज्ञ, काम्यकर्म, वास्तुनिर्माण, वास्तुयोग यशस्काम कर्म का वर्णन चतुर्थ प्रपाठक में है।

खादिर गृह्यसूत्र का परिचय

- खादिर गृह्यसूत्र का सम्बन्ध राणायनीय शाखा से है।
- खादिर गृह्यसूत्र पर रुद्रस्कन्द की वृत्ति प्राप्त होती है।
- 1913 में महादेव शास्त्री ने इसका एक संस्करण मैसूर से प्रकाशित किया।

द्राह्यायण गृह्यसूत्र का परिचय

- द्राह्यायण गृह्यसूत्र के दो संस्करण प्राप्त होते हैं।
- आनन्द आश्रम पूना से 1914 तथा हिन्दी अनुवाद सहित मुजफ्फरपुर से 1934 ई. में प्रकाशित।

जैमिनीय गृह्यसूत्र का परिचय

- जैमिनीय गृह्यसूत्र में दो अध्याय हैं।
- प्रथम अध्याय में चौबीस और द्वितीय में नौ कण्डिकाएँ हैं।
- संस्कारों का वर्णन प्रथम अध्याय में तथा श्राद्ध, अष्टकाएँ, अन्त्येष्टि और शान्तिकृत्य का उल्लेख द्वितीय अध्याय में है।
- जैमिनीय गृह्यसूत्र पर श्रीनिवासाध्वरी की सुबोधिनी टीका प्राप्त होती है।

कौथुम गृह्यसूत्र का परिचय

- कौथुम गृह्यसूत्र का सम्पादन सूर्यकान्त ने किया जो एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता से प्रकाशित है।
- कौथुमगृह्यसूत्र में सबसे पहले प्रायश्चित्तों का वर्णन है।

अथर्ववेद के गृह्यसूत्र

- अथर्ववेद का एकमात्र गृह्यसूत्र प्राप्त होता है जो **कौशिक गृह्यसूत्र** है।
- कौशिक गृह्यसूत्र मे चौदह अध्याय हैं जिसका विभाजन कण्डिकाओं में है।
- कौशिक गृह्यसूत्र में शान्ति कर्म और अभिचार कर्मों का वर्णन है जो अथर्ववेद से गृहीत है।
- कौशिक गृह्यसूत्र में गृह कर्मों का वर्णन कम है। अभिचार कर्मों, यातुविद्या, मन्त्र-तन्त्र, रोगनाशक उपाय, आदि का वर्णन अधिक है।

धर्मसूत्रों का परिचय

- धर्मसूत्र आचार संहिता से सम्बद्ध ग्रन्थ हैं।
- धर्मसूत्र स्मृतियों के पूर्वरूप हैं।
- समाज को शान्ति और स्थिरता प्रदान करना धर्मसूत्रों का उद्देश्य है।
- करनिर्धारण, कर के प्रकार, कर का उपयोग, सम्पत्ति विभाजन, स्त्रीधन का स्वरूप आदि विषयों का वर्णन धर्मसूत्रों में प्राप्त होता है।

ऋग्वेद के धर्मसूत्र

- ऋग्वेद के दो धर्मसूत्र प्राप्त हैं- वासिष्ठ धर्मसूत्र तथा विष्णु धर्मसूत्र।

वासिष्ठ धर्मसूत्र का परिचय

- वासिष्ठ धर्मसूत्र महर्षि वसिष्ठ की रचना है।
  इसमें अध्यायों की संख्या भिन्न-भिन्न है, आनन्दाश्रम और फ्यूहरर के संस्करण में तीस-तीस अध्याय हैं।
- 25-28 अध्याय पद्यात्मक रूप में हैं तथा अध्याय 29–30 में गद्य एवं पद्य दोनों है।
- वासिष्ठ धर्मसूत्र में **'आचारः परमो धर्मः'** कहकर सदाचार पर बहुत बल दिया गया है।

विष्णु धर्मसूत्र का परिचय

- विष्णु धर्मसूत्र गद्य एवं पद्य से मिश्रित है।
- इस धर्मसूत्र में स्मृति, गौतम धर्मसूत्र, वासिष्ठ धर्मसूत्र के श्लोक एवं सूत्र प्राप्त होते हैं।
- डा. जोली ने इसे अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया।

यजुर्वेद के धर्मसूत्र

हारीत धर्मसूत्र का परिचय

- इसमें पद्यात्मक वचन प्राप्त होता है।
- आठ प्रकार के विवाहों में आर्ष और प्राजापत्य के स्थान पर क्षात्र और मानुष नाम का उल्लेख है।
- आनन्द आश्रम पूना संस्करण से वृद्ध हारीत नाम से प्रकाशित हुआ है जिसमें दस अध्याय हैं।

बौधायन धर्मसूत्र का परिचय

- बौधायन धर्मसूत्र बौधायन कल्पसूत्र का अंश है ।
- बौधायन धर्मसूत्र में चार प्रश्न (अध्याय) हैं। डॉ0 कीथ ने चतुर्थ प्रश्न को प्रक्षिप्त माना है।
- चतुर्थ प्रश्न पद्यात्मक है और पूर्व प्रश्नों के ही विषय हैं ।
- बौधायन धर्मसूत्र आपस्तम्ब से पूर्ववर्ती तथा गौतम से परवर्ती है ।

बौधायन धर्मसूत्र में प्रतिपादित विषय

ब्रह्मचर्य के नियम,दायभाग, भक्ष्याभक्ष्य, चातुर्वर्ण्य विचार वर्णसङ्कर, राजा के कर्तव्य, पाँच महापाप और उनके दण्ड, आठ प्रकार के विवाह।	प्रथम प्रश्न
महापातकों के प्रायश्चित्त,कृच्छ्र आदि व्रत, संन्यास के नियम आदि।	द्वितीय प्रश्न
वानप्रस्थ, संन्यासी के धर्म, चान्द्रायण व्रत।	तृतीय प्रश्न
प्रायश्चित्त, काम्य सिद्धियाँ।	चतुर्थ प्रश्न

आपस्तम्ब धर्मसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब धर्मसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं ।

- आपस्तम्ब कल्पसूत्र के दो प्रश्न 28-29 आपस्तम्ब धर्मसूत्र कहे जाते हैं ।
- दोनों प्रश्नों में 11-11 पटल हैं।
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र में प्राचीन दस आचार्यो का उल्लेख है।
- श्रुति,अंग, विधि आदि मीमांसा के पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख है।
- प्राजापत्य और पैशाच विवाह को अवैध माना गया है।
- आपस्तम्ब धर्मसूत्र में ब्याज लेना निन्द्य है ऐसा वर्णन प्राप्त होता है।
- हरदत्त मिश्र की उज्ज्वला व्याख्या प्राप्त होती है।

सामवेद के धर्मसूत्र

- सामवेद का एक ही धर्मसूत्र प्राप्त होता है - गौतमधर्मसूत्र

गौतम धर्मसूत्र का परिचय

- गौतम धर्मसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है।
- गौतम धर्मसूत्र के रचयिता गौतम हैं।
- गौतम धर्मसूत्र में 28 अध्याय तथा एक हजार सूत्र प्राप्त होते हैं ।
- गौतम धर्मसूत्र का 26 वाँ अध्याय सामविधान ब्राह्मण के समान है ।

गौतम धर्मसूत्र में प्रतिपादित विषय

प्रतिपादित विषय	अध्याय
धर्मस्रोत,उपनयन,चार आश्रमों का वर्णन ब्रह्मचारी, गृहस्थ, भिक्षु और वैखानस के कर्तव्य, आठ प्रकार के विवाह,पंचमहाव्रत	अध्याय 1-5
माता-पिता-गुरु का सत्कार,आपद्धर्म, 40 संस्कार चारों वर्णों के कर्तव्य, राजधर्म, कर, सम्पत्ति की सुरक्षा	अध्याय 6-10
अपराध और दण्ड-विधान, साक्षी साक्ष्य के नियम	अध्याय 11-15
भक्ष्याभक्ष्य विचार, स्त्रीधर्म,नियोग विविध पातक और प्रायश्चित्त	अध्याय 16-20
विविध पातक और प्रायश्चित्त, कृच्छ्र आदि व्रत, चान्द्रायण व्रत, सम्पत्ति का विभाजन दायभाग	अध्याय 21-28

शुल्बसूत्रों का परिचय

- शुल्बसूत्र गणितशास्त्रीय वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं।
- शुल्बसूत्र में गणितशास्त्र के अङ्ग ज्यामितीयशास्त्र से सम्बद्ध अनेक प्रमेय दिए गए हैं।
- यज्ञ की वेदी के निर्माण की विधि एवं छोटी - बड़ी वेदियों का वर्णन शुल्बसूत्र में प्राप्त होता है।
- शुल्ब शब्द का अर्थ रस्सी है।
- रेखागणित की दृष्टि से शुल्बसूत्रों का काफी महत्त्व है।

बौधायन शुल्बसूत्र का परिचय

- बौधायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है, इसके रचयिता बोधायन मुनि हैं।
- बोधायन का समय 900ई.पू. से 850 ई.पू. के मध्य माना जाता है ।

- बौधायन शुल्बसूत्र सबसे प्राचीन शुल्बसूत्र है।
- बौधायन शुल्बसूत्र में तीन परिच्छेद तथा 519 सूत्र हैं।
- तीनों परिच्छेद में सूत्रों की संख्या -

परिच्छेद		सूत्र
प्रथम	-	113 सूत्र
द्वितीय	-	83 सूत्र
तृतीय	-	323 सूत्र

- बौधायन शुल्बसूत्र पर दो टीकाएँ प्राप्त हैं -
  1. द्वारकानाथ यज्वा की शुल्बदीपिका टीका।
  2. वेंकटेश्वर दीक्षित की शुल्बमीमांसा टीका।

आपस्तम्ब शुल्बसूत्र का परिचय

- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है ।
- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र के रचयिता आपस्तम्ब हैं, जिनका समय 7 वीं शती ई.पू. माना जाता है ।
- आपस्तम्ब शुल्बसूत्र में छः पटल, 21 अध्याय तथा 498 सूत्र हैं ।

आपस्तम्ब शुल्बसूत्र के प्रतिपादित विषय -

- एक से तीन अध्यायों में वेदियों की रचना के आधारभूत रेखागणितीय सिद्धान्त का विवरण - प्रथम पटल
- अध्याय 4-6 में वेदियों के क्रमिक स्थान और उनकी विभिन्न आकृतियों का वर्णन तथा उनके बनाने के ढंग का वर्णन - द्वितीय पटल
- पन्द्रह अध्यायों में काम्य इष्टियों के लिए आवश्यक वेदियों के आकार प्रकार का वर्णन - अध्याय 3-6 में।

कात्यायन शुल्बसूत्र का परिचय

- कात्यायन शुल्बसूत्र का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है।
- कात्यायन शुल्बसूत्र को कात्यायन शुल्ब परिशिष्ट या कातीय शुल्ब परिशिष्ट कहते हैं।
- इसके दो भाग हैं, प्रथम भाग सूत्रों में हैं, इसमें छः कण्डिकाओं में 102 सूत्र हैं ।
- द्वितीय भाग श्लोकात्मक है जिसमें चालीस श्लोक हैं।
- कात्यायन ने वेदिनिर्माण के नियमों का विशेष क्रमबद्ध रूप से वर्णन किया है ।
- कात्यायन शुल्बसूत्र की तीन टीकाएँ प्राप्त होती हैं।

मानव शुल्बसूत्र का परिचय

- मानव शुल्बसूत्र गद्य-पद्य मिश्रित एक छोटा ग्रन्थ है।
- इसमें प्रसिद्ध 'सुपर्णा चिति' वेदी का विवरण है, जो अन्यत्र नहीं प्राप्त होती।
- इसमें अनेक नवीन वेदियों का वर्णन मिलता है, जो अन्य शुल्बसूत्रों में नहीं है।

❑❑